खण्ड - क

मानक हिन्दी का स्वरूप और व्याकरणीय संरचना

मानक हिन्दी भाषा

मानक का अर्थ होता है निश्चित पैमाने के अनुसार गठित होना। ऐसी भाषा जो एक निश्चित पैमाने के अनुसार लिखि या बोली जाती है।

मानक भाषा का पैमाना व्याकरण है क्योंकि व्याकरण के अनुसार हीं बोली या लिखी जाती है।

उ०- समाचार पत्र लिखावट,
रेडियो या दूरदर्शन प्रसारण ...
आदि

मानक भाषा सर्वमान्य होती है। इसमें निश्चित अर्थ सम्प्रेषण करने की क्षमता होती है। सम्प्रेषण एवं गठन की एकरूपता इसका विशेष गुण है। मानक भाषा को अंग्रेजी में स्टैंडर्ड लैंग्वेज कहते हैं।

* मानक भाषा की आवश्यकता क्यूँ पड़ी

- जन समुदाय से संपर्क स्थापित करने के लिए।
- सारे क्षेत्र को एकता के सूत्र में बाँधती है।
- देश में शासन तंत्र या शिक्षा व्यवस्था एकरूप में ~~चलाने~~ व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए।
- श्रेष्ठ साहित्य कृतियों का सृजन के लिए।
- विज्ञान और तकनीकी के लाभ के लिए।

आदी ---

* मानकीकृत भाषा के प्रमुख लक्षण

⇒ व्याकरण सम्मत, सर्वमान्य एकरूपता

⇒ सांस्कृतिक शैक्षणिक, प्रशासनिक एवं संवैधानिक क्षेत्रों का कार्य संपादित करने में सक्षम

⇒ सुस्पष्ट निर्धारित एवं सुनिश्चित

⇒ संप्रेषण से कोई भ्रांति नहीं होती।

⇒ नवीन आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित

→ नवीन शब्दों को ग्रहण और निर्माण में समर्थ

→ क्षेत्रीय एवं शैलीगत विभिन्नता होने पर भी स्थिर, त्रुटि एवं दोष रहित.

→ परिनिष्ठित साधु एवं संभ्रात भाषा कही जाती है क्यूँकि सभ्य और शिष्ट समाज के द्वारा मानक भाषा का प्रयोग की जाती है।

* मानक हिन्दी की वचन संरचना

हिन्दी में दो ही वचन स्वीकार किए गए हैं- एकवचन एवं बहुवचन। हिन्दी की वचन संरचना किसी तार्किक चिंतन का परिणाम न होकर भाषा के व्यावहारिक लोक प्रयोगों से उभरी है। अतः इस संबध में निश्चित नियम नहीं है। तब भी कुछ व्यावहारिक नियम इस प्रकार है।

(क) पुल्लिंग शब्दों में वचन संरचना

(i) आकारान्त पुलिंग एकवचन शब्द बहुवचन में एकारान्त हो जाते हैं -

जैसे - लड़का > लड़के

बेटा > बेटे

(ii) शेष सभी पुल्लिंग शब्द बहुवचन में भी अपरिवर्तित रहते हैं। केवल क्रिया व सर्वनाम के परिवर्तन से ही वचन परिवर्तन का ज्ञान होता है। जैसे -

यह उसका घर है > ये उसके घर हैं।